धर्म और संस्कृति एक सिक्के के दो पहलू हैं

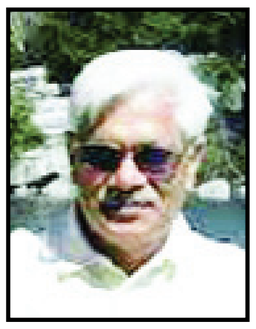

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

कुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,
पो. हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा.442001

जिन क्षेत्रों में आज आतंकवाद का साया मंडरा रहा है वहां की अस्थिरता, प्रजातांत्रिक संस्थाओं की असफलता और लम्बे अर्से से चली आ रही व्यापक आर्थिक विषमता, अभाव तथा वंचन का इतिहास मिलता है। सामाजिक चेतना आने से विसंगति की कुरूपता भयानक हो उठती है और शायद असह्य भी। ऐसी स्थिति में धार्मिक अतिवादिता को आधार बना कर निहित स्वार्थ वाले कुछ कारोबारी धर्मांध जनों को गुमराह कर अपनी रोटी सेंकते हैं।

उ. 1 मेरी दृष्टि में धर्म आतंकवाद का मूल कारण नहीं है। धर्म और हिंसा का जोड़ नहीं बैठता। धर्म का दुरुपयोग कर या कहें धर्म की आड़ में आतंक को ईश्वरेच्छा कह भोले भाले लोगों को फंसा कर आतंक का उपकरण बनाना घिनौनी राजनैतिक चाल होती है। अतिवाद से दृष्टि धूमिल पड़ जाती है और सच पर पड़ा आवरण नहीं दिखता। जिंदा बम बन कर आतंक फैलाना और जिहाद और बलिदान का भाव जगा कर उसे सही ठहराना और औचित्य स्थापित करना मूलतः राजनैतिक मुहिम का ही हिस्सा होता है। आज लश्कर ए तोएबा, अल कायदा और हमास जैसे आतंकी संगठन धर्म के नाम पर हिंसा कर रहे हैं। पहले भी ऐसा हुआ था। स्टालिन के रूस और नाजी जर्मनी में जो नरसंहार हुआ वह विचारधारा और राष्ट्रीयता की संकल्पना को उभार कर हुआ। ऐसे ही धार्मिक अतिवादिता भी संकुचित विचारधारा को जन्म देती है। अतिवादिता से उपजे भ्रमजाल में विवेक कहीं खो सा जाता है। ऐसे में एकांगी विचार पर ही जोर बना रहता है और दूसरे या भिन्न किस्म के विचार किनारे पड़ जाते हैं। धार्मिक रूढ़िवादिता आंखों पर पर्दा डाल देती है और उसके असर में अभिमंत्रित जैसा व्यक्ति बिना यह विचार किए कि यह ठीक है या नहीं उन कृत्यों में शामिल हो जाता है जो जीवन के ही विरुद्ध होते हैं। इस्लामी, यहूदी और क्रिश्चियन इतिहास में ऐसी लड़ाइयों के अनेक उदाहरण मौजूद हैं। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकी हमला, मुम्बई में ताज होटल, ओबेराय होटल, रेलवे स्टेशन अन्यत्र आतंकी हमले और पेरिस और ब्रुसेल्स में हुए ताजे आतंकी नरसंहार में धार्मिक विश्वास जुड़े हो सकते हैं परन्तु इनके तार राजनैतिक आकाओं के चुने लक्ष्य से भी महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हैं।

हम जिसे आतंक कहते हैं वह उसके पोषक अतिवादी व्यक्ति की दृष्टि में आतंक न हो कर स्वतंत्रता, स्वायत्तता और सही राह की यात्रा होती है, इसलिए वह गर्व से आतंक की जिम्मेदारी उठाता है और उसका उत्सव मनाता है। रिलीजन से जुड़ कर पैदा धुंध में उसका मताग्रह और तीव्र हो उठता है। उसके सामने कोई विकल्प शेष नहीं रहता और वह एकांत समर्पण के साथ, अदृश्य शक्ति की कल्पना के जोर से बड़े आवेग और आवेश के साथ हिंसा की राह पर चल पड़ता है।

आतंकियों में मनोरोग की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। पर आतंक के उद्भव के पीछे सामाजिक-आर्थिक कारणों की अनदेखी नहीं की जा सकती। जिन क्षेत्रों में आज आतंकवाद का साया मंडरा रहा है वहां की अस्थिरता, प्रजातांत्रिक संस्थाओं की असफलता और लम्बे अर्से से चली आ रही व्यापक आर्थिक विषमता, अभाव तथा वंचन का इतिहास मिलता है। सामाजिक चेतना आने से विसंगति की कुरूपता भयानक हो उठती है और शायद असह्य भी। ऐसी स्थिति में धार्मिक अतिवादिता को आधार बना कर निहित स्वार्थ वाले कुछ कारोबारी धर्मांध जनों को गुमराह कर अपनी रोटी सेंकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में विशेषतः अमेरिका द्वारा ईराक पर की गई कारवाई के बाद इस्लामी देशों में जैसे अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईराक, नाइजीरिया और सीरिया आतंकवाद की गिरफ्त में हैं।

उ.2 वैश्विक राजनीति में जब राज-सत्ता का ध्रुवीकरण होता है तो तात्कालिक लाभ पाने और अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए कई अस्वाभाविक हथकंडे अपनाने में भी संकोच नहीं किया जाता है। शीत युद्ध खत्म होने के बाद वैश्विक स्तर पर राजनैतिक समीकरण बदला है। अब बड़े पश्चिमी देशों में श्रम की शक्ति की उपेक्षा और तकनीकी प्रगति ने सत्ता की शक्ति के नए आयाम खोल दिए हैं। शोषण और सहयोग दोनों के ही कई रास्ते खुले हैं। आर्थिक और राजनैतिक सत्ता पर काबिज होना आतंक से जुड़ा हुआ है। पेट्रोल पर अधिकार और उसका उपयोग कई तरह से हिंसा और युद्ध से जुड़ रहा है।